रोजगारोन्मुख हिंदी

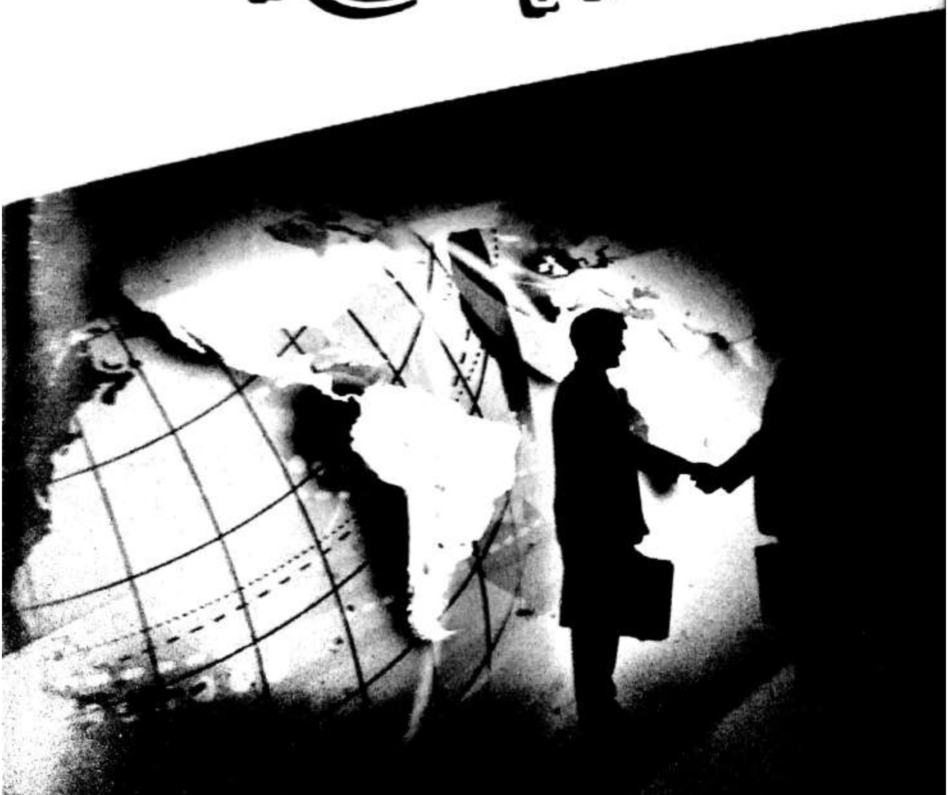

प्रधान संपादक
प्राचार्य डॉ. गणेश ठाकुर

संपादक
प्रा. सविता मेनकुदळे
डॉ. इन्नुस शेख

Scanned by CamScanner

रोजगारोन्मुख हिंदी

प्रधान संपादक

प्राचार्य डॉ. गणेश ठाकुर

•

संपादक

प्रा. सविता मेनकुदळे

डॉ. इन्नुस शेख

•

सह-संपादक

प्रा. निर्मला माने

डॉ. भारत खिलारे

प्रा. रुकसाना पठाण

सारंग प्रकाशन

वाराणसी-221 007

Scanned by CamScanner

प्रकाशक
सारंग प्रकाशन
आशापुर, सारनाथ
वाराणसी-221007 (उ० प्र०)
मो०: 09450540654, 09415447276

ISBN : 978-81-927504-9-1

© सम्पादकाधीन
प्रथम संस्करण : 2015
मूल्य : 695.00 रुपये मात्र

शब्द-संयोजन : विष्णु ग्राफिक्स

मुद्रक : पूजा प्रिण्टर्स
बसंत विहार, नौबस्ता, कानपुर

नोट– पुस्तक में प्रकाशित आलेख के लिए लेखक जिम्मेदार है, सम्पादक या प्रकाशक नहीं।

ROJGARONMUKH HINDI

Chief Editor : Principal Dr. Ganesh Thakur

Edited By : Prof. Savita Menkudle, Dr. Innus Shekh

Price : Rs. Six Hundred Ninety Five Only

Scanned by CamScanner

43. हिंदी के बलबूते पर रोजगार के अवसर 195-200
डॉ. भास्कर उमराव भवर

44. रोजगारोन्मुख हिंदी–दूरदर्शन के कार्यक्षेत्र 201-208
कु. भारती बापू सुतार

45. इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में रोजगार के अवसर 209-211
कु. भक्ती शंकर भालदारे

46. हिंदी में रोजगार के अवसर 212-215
डॉ. बेबी श्रीमंत खिलारे

47. हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर 216-218
प्रा. डॉ. बलवंत बी.एस.

48. हिंदी से रोजगार की संभावनाएँ 219-224
लेफ्ट. डॉ. बाबासाहेब माने

49. अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के अवसर 225-230
प्रा. डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले

50. मीडिया लेखन में रोजगार की संभावनाएँ 231-236
डॉ. उत्तम लक्ष्मण थोरात

51. रोजगार के परिप्रेक्ष्य में–रेडियो की बदलती दुनिया 237-242
डॉ. मैना रामदास जगताप

52. रोजगारोन्मुख हिन्दी 243-250
प्रा0 संदीप तानाजी कदम

53. संचार माध्यम और विज्ञापन 251-253
डॉ0 अंबुजा एन. माळखेडकर

54. अनुवाद और रोजगार हिन्दी 254-255
प्रा. वनिता एस. जाधव

55. जन–संप्रेषण माध्यमों में हिंदी की उपयोगिता 256-259
डॉ. गोरखनाथ किसन किर्दत

56. रोजगारोन्मुख हिंदी 260-265
डॉ0 कृष्णात आनंदराव पाटील

57. विज्ञापन : एक आकर्षक कैरियर 266-271
डॉ. अशोक बाचुळकर

Scanned by CamScanner

48

हिंदी से रोजगार की संभावनाएँ

आज हिंदी विषय को लेकर छात्रों के मन में तरह–तरह के विचार आने लगे हैं। कभी उन्हें लगता है कि हिंदी भाषा ने बहुत प्रगति की है । इसलिए इस विषय को लेकर अध्ययन करने से अनेक तरह की नौकरियाँ मिल सकती हैं तो कभी लगता है कि हिंदी आज वैश्विक भाषा बनी हुई है। इसलिए संपूर्ण विश्व में हिंदी से रोजगार मिल सकता है । परंतु दूसरी ओर उनके मन को यह भी विचार सताने लगा है कि हिंदी भाषा सीखने से या उसका विशेष स्तर पर अध्ययन करने से कौन–कौन से रोजगार मिल सकते हैं ? रोजगार मिलने की संभावना है भी , या नही ? इसके अतिरिक्त तीसरी ओर कभी दो छात्र आपस में यह संवाद करते भी सुनाई पडते हैं कि क्या यार! देख! मैंने हिंदी विषय लेकर एम. ए. की डिग्री हासिल की है, फिर भी मुझे रोजगार नहीं मिल पाया है। क्या फायदा है ? इस हिंदी विषय का अध्ययन करने से। इसका अध्ययन करने से नौकरी तो दूर की बात है, छोटा–मोटा रोजगार भी प्राप्त नहीं होता। इसी तरह के विचार छात्रों के मन में निराशा उत्पन्न करने लगे हैं । यहाँ पर यह भी स्पष्ट हो जाता है कि ऐसे विचार छात्रों के मन में उत्पन्न होना स्वाभाविक भी है। क्योंकि वर्तमान भारत में हालात ही ऐसे बने हैं कि हिंदी भाषा का सामान्य या विशेष स्तर पर अध्ययन करने से सभी छात्रों को, उनके मन मुताबिक नौकरी नहीं मिल रही है। परिणाम स्वरुप छात्रों के मन में उक्त विचार उत्पन्न हो रहे हैं। लेकिन इस पर गहराई से सोचा जाए तो क्या हिंदी भाषा का अध्ययन नहीं किया जाना चाहिए ? क्या हिंदी का अध्ययन करने से रोजगार की प्राप्ति नहीं हो सकती ? क्या हिंदी से छात्र अपने पैरों पर खड़े होकर अपने परिवार को सुधार नहीं सकते ? इन सारे सवालों का एक ही उत्तर आता है कि "नहीं ! यह बात बिलकुल सही नहीं है कि हिंदी भाषा का अध्ययन करने से रोजगार की प्राप्ति नहीं होती।" कोई भी छात्र जिसने हिंदी भाषा का सामान्य या विशेष स्तर पर अध्ययन किया हो, उसे निश्चित रुप से रोजगार मिल सकता है । इसके लिए जरुरी है कि छात्रों में आत्मविश्वास, लगन एवं मेहनत करने की क्षमता निहित हो । उन्होंने हिंदी का सही एवं प्रभावी ज्ञान ग्रहण किया हुआ हो। उनमें हमेशा सकारात्मक सोच हो। उनमें नए–नए

Scanned by CamScanner

क्षेत्रों में जाने का जोखिम उठाने की ताकत हो और उन क्षेत्रों की बारीकियों को समझकर उनमें प्रवीणता हासिल करने की हिम्मत हो। इतना होने पर भारतवर्ष में शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र होगा जिसमें हिंदी भाषा का अध्ययन करने से नौकरी अथवा रोजगार न मिलता हो । अतः भारत में ही नहीं , संपूर्ण विश्व में हिंदी से रोजगार मिलने की अपार संभावनाएँ निहित हैं । जिनका जिक्र नीचे किया जा रहा है।

प्रथमतः हम भारतवर्ष में सबसे अधिक प्रचलित एवं प्रसिद्ध क्षेत्रों में से प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया में रोजगार की खोज कर सकते हैं। यें दोनों ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें हिंदी भाषा का अध्ययन करने वाले छात्रों को असंख्य रोजगार उपलब्ध हैं । आज भारत में प्रिंट मीडिया का विस्तार बडे पैमाने पर हो रहा है । हर शहर एवं राज्य में नए–नए अखबार एवं पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं । इन अखबारों एवं पत्र–पत्रिकाओं से लोगों को घर बैठे सबकुछ जानकरी हासिल करने का सुनहरा अवसर प्राप्त हो गया है । चूँकि वर्तमान भारत में मुद्रण की व्यवस्था ने विकास के एक–से–एक शिखर पदाकांत किए हैं। इसका फायदा पूरे समाज को होने लगा है। आज का भारतीय समाज भौतिक सुख–सुविधाओं की प्राप्ति के लिए दिन–रात भागादौड़ी कर रहा है । ऐसे में समाज के पास किसी ग्रंथालय में जाकर या किसी अखबार के दफ्तर में जाकर जानकारी प्राप्त करने के लिए समय नहीं है। बदली हुई जिंदगी के कारण लोग कम समय में अपने–आप को अपडेट रखना चाहते हैं। परिणाम स्वरुप प्रिंट मीडिया का तेजी से विकास हुआ है और आगे भी होता रहेगा । इस प्रिंट मीडिया के जगत् में हिंदी से रोजगार मिलने की असीम संभावनाएँ निहित हैं। सरसरी नजर से देखा जाए तो ज्ञात होता है कि किसी एक हिंदी अखबार को चलाने के लिए कई व्यवस्थाओं से गुजरना पडता है । जिनमें प्रबंधन से लेकर अखबारों के वितरण तक की व्यवस्थाएँ आती हैं। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि एक समाचार पत्र को चलाने के लिए इन व्यवस्थाओं में कई पदों पर रोजगार उपलब्ध होता है। जिनमें प्रबंधन निदेशक (मैनेजिंग डायरेक्टर), सामान्य व्यवस्थापक (जनरल मैनेजर), वैयक्तिक व्यवस्थापक अथवा प्रबंधक (पर्सनल मैनेजर), वित्तीय प्रबंधक (फायनन्स मैनेजर), प्रमुख संपादक (चीफ एडीटर), सहायक संपादक (असिस्टंट एडीटर), समाचार संपादक (न्यूज एडीटर), विशेष संवाददाता (स्पेशल रिपोर्टर), विज्ञापन प्रबंधक (एडवरटाइजिंग मैनेजर), विज्ञापन विशेषज्ञ , मुद्रण के विविध कार्यों के लिए टंकक (टायपिस्ट), समाचार एवं विज्ञापन व्यवस्थापक, प्रूफ रीडर, पैंकिंग कर्मचारी, वितरण विभाग में दलाल (एजंट), वितरक, हाकर्स आदि आते हैं । इन विविध पदों पर हिंदी भाषा का अध्ययन करने वाले छात्रों को आसानी से रोजगार मिल सकता है । समाचार पत्रों के अतिरिक्त पत्रकारिता के क्षेत्र में भी हिंदी का अध्ययन करने वाले छात्रों को अनेक तरह के रोजगार मिलने की संभावनाएँ हैं।

Scanned by CamScanner

इसके लिए छात्रों को जरुरी है कि वे हिंदी भाषा के अध्ययन के साथ–साथ पत्रकारिता का कोर्स भी पूरा करे। भारत में विभिन्न तरह की पत्रकारिताओं का प्रचलन बढ़ गया है। जिनमें अनुसंधानात्मक पत्रकारिता, आर्थिक पत्रकारिता, धार्मिक पत्रकारिता, राजनैतिक पत्रकारिता, संसदीय पत्रकारिता, रेडियो पत्रकारिता, फिल्म पत्रकारिता, खेल पत्रकारिता आदि क्षेत्र आते हैं। इनमें छात्रों को अपने मनपंसद क्षेत्र में पत्रकारिता का करने सुअवसर मिलता है। छात्र किसी भी क्षेत्र में पत्रकारिता का कोर्स पूरा करके अपने लिए रोजगार प्राप्त कर सकता है।

प्रिंट मीडिया के इन विविध विभागों के अतिरिक्त जहॉ हम इलेक्ट्रानिक मीडिया की बात करते हैं तो ज्ञात हो जाता है कि जिस तरह से प्रिंट मीडिया का विकास तेजी हो चुका है, उसी तरह से इलेक्ट्रानिक मीडिया ने भी अपनी धूम मचाई है। रेडियो., टी.वी. वीडियों, मल्टीमीडिया तथा वेब एवं इंटरनेट पत्रकारिता आदि इलेक्ट्रानिक माध्यमों में काफी इजाफा हो चुका है। रेडियों की अगर बात की जाए तो यह तथ्य सर्ववादित है कि रेडियों एक श्रव्य माध्यम है। जिसमें ज्ञान–विज्ञान के कार्यक्रमों से लेकर मनोरंजनात्मक कार्यकमों का भी प्रसारण होता है। फलस्वरुप भारत के कई शहरों में प्रसार भारती आकाशवाणी से लेकर 91.1 एफ.एम., 93.5 एफ.एम., 94.5 एफ.एम., 98.3 एफ.एम. आदि कई रेडियों चैनल शुरु हो चुके हैं। इन चैनलों में समाचार वाचक (न्यूज एडीटर), संवाददाता (रिपोर्टर), समाचार लेखक (न्यूज राईटर), उप संपादक (सब एडिटर), सहायक समाचार संपादक (असिस्टंट न्यूज एडीटर), हिंदी कार्यकम अधिकारी, उद्घोषक (अनाउन्सर), विविध ज्ञान–विज्ञान की खबरों के लिए लेखक, विशेषज्ञ, सूत्रधार, विश्लेषक, विज्ञापन लेखक , विज्ञापन प्रसारक आदि विविध पदों पर रोजगार मिलने की निश्चित संभावनाएँ दृष्टिगत होती हैं। परंतु इसके लिए छात्रों को इन क्षेत्रों में जाने और वहाँ के तकनीकि ज्ञान को सीखने के साथ ही हिंदी भाषा का उन्नत एवं प्रभावी ज्ञान भी बहुत आवश्यक होता है। इसके अतिरिक्त जब हम टी.वी. क्षेत्र की ओर मुडते हैं तो देख सकते हैं कि आज कल दूरदर्शन के साथ ही टी.वी. के सैकड़ों चैनलों का प्रचलन एवं प्रसारण भारतवर्ष में हो रहा है। जिनमें समाचार, मनोरंजन, खेल, अध्यात्म, इतिहास, भूगोल, गीत, वन्य जीव आदि विविध क्षेत्रों की जानकारी देनेवाले और दर्शकों का मनोरंजन करने वाले कई चैनल हैं। इनमें से प्रायः बहुसंख्य चैनलों का प्रसारण हिंदी में होता है। चूँकि भारत का अधिकांश श्रोता एवं दर्शक हिंदी को ही अधिक जानता और समझता है। ऐसे में इन चैनलों में सवांददाता, समाचार वाचक, सूत्र संचालक, मनोरंजनात्मक कार्यकमों की निर्मिति हेतु निर्माता, निर्देशक, कथा लेखक, गीतकार, कलाकार, ध्वनि विशेषज्ञ, स्किप्ट वाचक आदि पदों पर रोजगार के काफी अवसर खुले हैं। अतः हिंदी भाषा का अध्ययन करनेवाले छात्रों को इनकी ओर गंभीरता से ध्यान देने की जरुरत है। तभी उन्हें इन पदों पर रोजगार मिल सकता है। इसके साथ

Scanned by CamScanner

ही ई–जर्नल्स, ई–बुक , ई–मैगजिन्स और ई–समाचारों को चलाकर भी छात्र रोजगार की प्राप्ति कर सकते हैं। टी.वी. क्षेत्र की तरह ही फिल्म क्षेत्र भी अपनी धूम मचाने लगा है। भारतीय फिल्में आज पूरी दुनिया में पहुँच चुकी है । इसकी व्यापकता में निरंतर बढोत्तरी हो रही है। परिणामतः इस क्षेत्र में भी रोजगार की असीम संभावनाएँ निहित हैं। यहाँ भी टी.वी. क्षेत्र की तरह ही निर्माता, निर्देशक, पटकथा लेखक, गीतकार, संगीतकार, कालाकार, वितरक, समीक्षक आदि के रुप में काम करने का अवसर मिल सकता है।

इन क्षेत्रों के अतिरिक्त साहित्यिक क्षेत्र में हिंदी भाषा का अध्ययन करने से अनेक तरह का रोजगार प्राप्त हो सकता है। जिस छात्र की हिंदी भाषा पर प्रभावी पकड़ है, जो छात्र हिंदी साहित्य की विविध विधाओं को भली–भाँति जानता है और जिसमें रचनात्मक कौशल है। ऐसा छात्र कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, हास्य–व्यंग्य, निबंध, जीवनी और आत्मकथा आदि में से कोई भी विधा लिखकर रोजगार पा सकता है। इतना ही नहीं, रोजगार के साथ–साथ उसे प्रसिद्धि भी मिल सकती है। इसके लिए छात्रों को जिस विषय पर वें लिख रहे हैं उस विषय का गहरा ज्ञान, भाषा की गहराई, पाठकों की रोचकता और सामाजिक उद्धार के उद्देश्य को ध्यान में रखकर लिखना आवश्यक होता है। साहित्य क्षेत्र इतना बड़ा है कि इसमें अनेक तरह के रोजगार उपलब्ध हैं । छात्रों को केवल इन्हें तलाशने की जरुरत है और इन रोजगारों के योग्य बनने की आवश्यकता है। साहित्यिक क्षेत्र में अनुवाद एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें काफी रोजगार की संभावनाएँ निहित हैं। किसी भी दूसरी भाषा की कृति का अनुवाद करके हिंदी भाषा का छात्र रोजगार प्राप्त कर सकता है। इसके लिए अनिवार्य शर्त यह है कि छात्र जिस भाषा की कृति का अनुवाद कर रहा है, उस भाषा का सूक्ष्म ज्ञान भी उसके पास होना चाहिए और जिस भाषा में उस कृति को वह अनुदीत कर रहा है। उस भाषा पर भी उसकी मजबूत पकड़ होनी चाहिए। आजकल साहित्यिक क्षेत्र के साथ ही अन्य क्षेत्रों में भी अच्छे अनुवादकों की माँग बढ़ रही है। ऐसे में छात्रों को प्रभावी अनुवादक बनकर ऐसे मौकों का फायदा उठाना चाहिए।

वर्तमान सदी में पूरी दुनिया के लिए भारत सबसे बड़े बाजार के रुप में उभर रहा है। परिणामस्वरुप विदेशी कंपनियाँ भारत में निवेश करके अपनी वस्तुओं को भारतीय बाजार में बेचने के लिए आमादा हैं। अतः उन कंपनियों के द्वारा निर्मित वस्तुओं को बेचने तथा उनका प्रचार–प्रसार बढ़ाने के लिए कंपनियों को रोचक एवं असरदार विज्ञापनों की आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति का भारतीय छात्र जिसने हिंदी भाषा का प्रगत एवं उन्नत ज्ञान ग्रहण किया हो और जो माँग के अनुसार रोचक एवं असरदार विज्ञापन लिखने की कला जानता हो। वह विज्ञापन लिखकर अधिक मात्रा में रुपये कमा सकता है। इसके लिए एक

Scanned by CamScanner

कंपनी चार–पॉच हजार से ज्यादा रुपये दे देती है। इनसे छात्रों का जीवन सुधार सकता है। इन कंपनियों के लिए एक विज्ञापन लेखक के अतिरिक्त एक अच्छे प्रबंधक की भी जरुरत होती है। इसके लिए भाषा के छात्र को प्रबंधन का कोर्स भी अनिवार्य होता है। जिस छात्र ने कंपनी की मॉग के अनुसार प्रबंधन का कोर्स किया है, जिस देश की वह कंपनी है, उस देश की भाषा का ज्ञान जिसके पास है और जिसने हिंदी भाषा का प्रभावी ज्ञान ग्रहण किया है, ऐसे छात्र को कंपनी प्रबंधक रुप में जरुर नियुक्त कर सकती है। इसका कारण यह है कि कंपनी को एक ऐसे प्रबंधक की आवश्यकता होती है, जो कंपनी के मालिक, कर्मचारी और ग्राहकों के बीच बराबर संबंध स्थापित कर सके। इससे कंपनी को लाभ अधिक होता है और कंपनी उसे भारी–भरकम वेतन देकर नियुक्त कर देती है। ऐसी बहुसंख्य कंपनियों में प्रबंधक के अतिरिक्त विविध पदों पर काम करने के लिए विभिन्न कर्मचारियों की भी आवश्यकता होती है। अतः छात्रों को हिंदी भाषा के ज्ञान के साथ–साथ विविध पदों के अनुसार तकनीकी ज्ञान से भी परिपूर्ण होना होगा। तभी उन्हें विविध पदों पर नौकरी अथवा रोजगार मिल सकता है। भारत के प्रधानमंत्री जिस स्किल डवलपमेंट की बात बड़े जोरशोर से कर रहे हैं। इसका प्रयोजन यही है कि भारतीय नवजवान भाषा के अध्ययन के साथ–साथ नए–नए स्किल्स का भी विकास करे और रोजगार प्राप्ति में कामयाब हो जाए। ताकि वह अपने विकास के साथ–साथ देश के विकास में भी भागीदार बने।

शिक्षा के क्षेत्र की अगर हम बात करते हैं तो ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र में भी हिंदी भाषा का अध्ययन करनेवाले छात्रों को रोजगार के काफी अवसर उपलब्ध हैं। आज पूरी दुनिया में शिक्षा के नए–नए केंद्र खुल चुके हैं। जिनमें देश–विदेश की कई भाषाओं का अध्ययन–अध्यापन होता है। इनसे छात्रों को भाषा ज्ञान के साथ–साथ तकनीकी ज्ञान ग्रहण करने का भी सुनहरा मौका मिल जाता है। जिस तरह से हिंदी भाषा का अध्ययन–अध्यापन विदेशी कई विश्वविद्यालयों में हो रहा है , वैसे ही भारत में भी अनेक विश्वविद्यालय ऐसे हैं जिनमें विदेशी भाषाओं का अध्ययन–अध्यापन हो रहा है। अतः जिन छात्रों को शिक्षा के क्षेत्र में या अध्यापन क्षेत्र में कैरिअर करना है। उन्हें हिंदी भाषा के अध्ययन के साथ–साथ किसी विदेशी भाषा का अध्ययन करना भी अनिवार्य है। तभी वें विदेश में नौकरी पाने में सफल हो सकते हैं। आजकल कई विदेशी विश्वविद्यालय भारत में आ चुके हैं और वें भारतीय छात्रों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। ऐसे में हिंदी भाषा के अच्छे ज्ञाता एवं जिस देश का वह विश्वविद्यालय है, उस देश की भाषा को प्रभावी रुप में जाननेवाले कर्मचारियों और अध्यापकों की उन्हें आवश्यकता है। चुंकि भारतीय समाज और विदेशी विश्वविद्यालयों की बीच सही एवं सटीक रुप से संवाद स्थापित हो सके। परिणमतः इन विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा और उस देश की भाषा का अध्ययन किया हुआ छात्र आसानी से

Scanned by CamScanner

रोजगार प्राप्त कर सकता है। हिंदी भाषा के अध्ययन से अनेक तरह के रोजगार अपने ही राज्य एवं देश में भी उपलब्ध हैं। जैसे आप सभी को वादित है कि हिंदी साहित्य में एम.ए. बी.एड. करने से किसी भी कनिष्ठ महाविद्यालय में जिसमें हिंदी का अध्यपान किया जाता हो वहॉ हिंदी अध्यापक के रुप में नौकरी मिल सकती है। इसके साथ ही हिंदी में एम.ए. सेट अथवा नेट उत्तीर्ण होने से किसी भी वरिष्ठ महाविद्यालय में सहायक प्राध्यापक के रुप में नौकरी मिल सकती है।

इन क्षेत्रों अतिरिक्त ऐसे तमाम क्षेत्र हैं जिनमें हिंदी भाषा का अध्ययन करनेवाले छात्रों को रोजगार मिल सकता है। परंतु उन क्षेत्रों की खोज छात्रों के दवारा ही अधिक होनी चाहिए। ताकि उन्हें रोजगार की प्राप्ति के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं का पता चल जाएगा और वे रोजगार पाने में सफल हो जाएंगे। कहा जाता है कि जहॉ चाह है, वहॉ राह जरुर मिलती है। अतः छात्रों में रोजगार प्राप्ति की अथक चाह होनी चाहिए, तभी उन्हें कोई–न–कोई मार्ग जरुर मिल जाएगा और रोजगार की प्राप्ति भी हो जाएगी। अन्यथा वे अगर ऐसे ही निराश और हताश बैठे रहेंगे तो उन्हें कदापि रोजगार नहीं मिल सकता। निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि हिंदी भाषा का अध्ययन करने से रोजगार की प्राप्ति नहीं हो सकती। यह विचार ही मन से निकाल देना चाहिए। छात्रों को हमेशा सकारात्मक सोच रखनी चाहिए, साथ ही नई–नई तकनीकों से अवगत होने की क्षमता का विकास भी करना चाहिए। चूँकि आज का युग स्पर्धात्मक होने के साथ–साथ नए–नए अविष्कारों का युग है। ऐसे में छात्रों की यह जिम्मेवारी बन जाती है कि वे इन तकनीकों और आविष्कारों से न केवल परिचित रहे, बल्कि उनका उचित ज्ञान ग्रहण करे । तब उन्हें रोजगार पाने से कोई नहीं रोक सकता।

– **लेफ्ट. डॉ. बाबासाहेब माने**
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
श्री शिव छत्रपति महाविद्यालय,
जुन्नर, जिला – पुणे
चलभाष : 9890730583

•

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

- हिन्दी भाषा और रोजगार
- मुद्रित और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में रोजगार की संभावनाएँ
- विज्ञापन में रोजगार की संभावनाएँ
- रोजगारोन्मुख हिंदी–अनुवाद कार्यक्षेत्र के संदर्भ में
- हिंदी के बूते पर रोजगार के अवसर –जनसंपर्क अधिकारी
- रोजगारोन्मुख हिंदी
- पत्रकारिता एवं इलेक्ट्रानिकी की देन से रोजगार
- समाचार–पत्र और हिंदी
- इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में रोजगार की संभावनाएँ दूरदर्शन (टेलीविजन) के संदर्भ में
- हिंदी में रोजगार की संभावनाएँ
- हिन्दी अनुवाद और रोजगार
- हिंदी में रोजगार के अवसर
- अनुवाद : रोजगार का व्यापक क्षेत्र
- हिंदी भाषा के अन्य क्षेत्रों में रोजगार की संभावनाएँ
- हिन्दी सिनेमा में रोजगार की संभावनाएँ
- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में रोजगार की संभावनाएँ
- अनुवाद के क्षेत्र में उपलब्ध रोजगार की संभावनाएँ
- हिंदी के अन्य क्षेत्रों रोजगार की संभावनाएँ
- जनसंचार माध्यम में रोजगार के अवसर
- पटकथा लेखन
- चिकित्सा जगत् में रोजगार की संभावनाएँ
- 'दूरदर्शन' में रोजगार के अवसर

सारंग प्रकाशन

ISBN 978-81-927504-9-1

₹ 650/-

Scanned by CamScanner